WWJMRD2022; 8(01):130-133
www.wwjmrd.com
*International Journal*
*Peer Reviewed Journal*
*Refereed Journal*
*Indexed Journal*
*Impact Factor SJIF 2017: 5.182 2018: 5.51, (ISI) 2020-2021: 1.361*
*E-ISSN: 2454-6615*

**डॉ. सतीश कुमार**
गावं: अमिन (कुरुक्षेत्र)

**Correspondence:**
**डॉ. सतीश कुमार**
गावं: अमिन (कुरुक्षेत्र)

# मीडिया शिक्षा का इतिहास विशेष संदर्भ : भारत

## डॉ. सतीश कुमार

**शोधसार**
प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय मीडिया के इतिहास पर आधारित है। इस शोध पत्र में भारत में मीडिया अध्ययन की शुरुआत का वर्णन किया गया है। यह शोध पत्र भारत में मीडिया अध्ययन के कार्मिक विकास और मीडिया संस्थानों की स्थापना और पाठ्यक्रम का वर्णन भी करता है इस शोध पत्र में शोधार्थी वर्तमान में मीडिया के अध्ययन की स्थिति का भी व्याख्यान करता है

**भूमिका**
21 शताब्दी की चुनौतियों और संभावनाओं ने मीडिया को प्रोफेशन के साथ ही पब्लिक सर्विस बना दिया है। अगर हम केवल भारत के संदर्भ में ही बात करते हैं विदेशी पूंजी निवेश के कारण मीडिया आज एक ब्रांड बनता जा रहा है। इसके अलावा 21वीं शताब्दी के हाईटेक युग में मीडिया क्षेत्र में हर वर्ष हजारों प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता पड़ती है। इसके अलावा विभिन्न मीडिया संस्थानों में कार्य करने के लिए अलग-अलग तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। जिनमें कार्य करने के लिए हर वर्ष तकनीकी रुप से प्रशिक्षित युवाओं की आवश्यकता है। अब बदलत समय के साथ ही बदलती तकनीक का ज्ञान भी होना आवश्यक है। ऐसे में विद्वानों का मत है कि यह बिना प्रशिक्षण के संभव नहीं हो सकता। मीडिया क्षेत्र हाईटेक होने के साथ ही इस क्षेत्र में कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए भी प्रशिक्षण की आवश्यकता को महसूस किया गया। आज भारत ही नहीं पुरे विश्व में शिक्षण संस्थानों में मीडिया क्षेत्र के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शुरूआत की गई है। भारत में लगभग सभी विश्वविद्यालय मीडिया क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिए विभिन्न कोर्सों को चला रहे हैं।

**मीडिया शिक्षा का इतिहास**
पत्रकारिता, रेडियो एवं टेलिविजन जैसे समूह माध्यमों में भी शिक्षा तथा प्रशिक्षण आवश्यक है, ऐसा सर्वप्रथम विश्वविख्यात पत्रकार जोसेफ पुल्तिजर को आया था। 1910 में अपनी शारीरिक तकलीफों के दौरान उन्होंने महसूस किया कि क्यों न इस कार्य के के लिए बीस लाख डालर का अनुदान दिया जाए। लेकिन जब यह बात उन्होंने अपने दोस्तों और सह कर्मियों ने इसमें असहमती जताई। इसके बाद उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय को इस बारे में प्रार्थना भेजी लेकिन विश्वविद्यालय की ओर से इसे स्वीकार करने से इंकार कर दिया। उनका प्रत्युत्तर आया कि मीडिया के क्षेत्र में किसी भी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।
पुल्तिजर ने उस समय भी कहा था कि भले ही आज कोई यह बात सोच नही सकता, लेकिन पत्रकारों को सच्चे पत्रकार बनाने के लिए तालीम तथा शिक्षा की मिलनी चाहिए, जिससे वे लोग जिन पाठकों के लिए अखबार निकाल रहे हैं, उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना, कर्तव्य अदा करना चाहता व समाज का ऋण अदा करना जैसी बातें समझ सके।

**भारत में मीडिया शिक्षा**
भारत में मीडिया शिक्षा व प्रशिक्षण का सर्वप्रथम प्रयास मद्रास आज के चेन्नई में 1920 में श्रीमति एनी बेसेंट द्वारा स्थापित नेशनल यूनिर्वसिटी में हुआ था। वहां अंग्रेजी साहित्य के विभाग में पत्रकारिता का विषय भी पढ़ाया जाता था। जिसमें पत्रकारिता के इतिहास, कानून और संपादन के विषय में सिखाया जाता था। कानून आदि की शिक्षा देने के लिए वकीलों, पत्रकारिता की शिक्षा के लिए पत्रकारों को बुलाया जाता था, लेकिन लगभग पांच वर्ष चलने के बाद यह विभाग बंद कर दिया गया। मीडिया शिक्षा

दुसरा प्रयास वर्ष 1930 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पत्रकारिता में स्वतंत्र डिप्लोमा अभ्यासक्रम का आरंभ किया गया। रहमअली अलहरामी का अहम योगदान रहा। विश्वद्यालय द्वारा उन्हें ही इस विभाग का प्रथम प्रभारी बनाया गया था। लेकिन यह प्रयास भी एक दशक के बाद बंद हो गया। अलहरामी के अधिकारियों के साथ बढ़ते मतभेदों के कारण 1940 में इस विभाग को विश्वविद्यालय द्वारा बंद कर दिया गया। मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में सबसे पुराना और आज भी कार्यरत विभाग प्रोफेसर पी.पी. सिंह के प्रयासों से 1941 में लाहौर में स्थित पंजाब विश्वविद्यालय में स्थापित किया गया था। प्रोफेसर सिंह स्वयं भी पत्रकारिता की शिक्षा लंदन विश्वविद्यालय से लेकर आए थे। अमेरिका में उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया था। प्रोफेसर पी.पी. सिंह को विश्वविद्यालय द्वारा इस विभाग का निर्देशक नियुक्त किया गया। 1947 में भारत के बंटवारे के साथ ही यह विभाग भी उनके साथ ही भारत आ गया और इसे कुछ समय के दिल्ली में स्थापित किया गया। जिसे 1962 में पंजाब विश्वविद्यालय में स्थापित कर दिया गया और तब से अब तक यह विभाग निरंतर इस क्षेत्र को प्रशिक्षित कर्मचारी प्रदान कर अपनी शाख को बनाए हुए है। इसके अलावा उधर पाकिस्तान मैं भी लाहौर विश्वविद्यालय में पत्रकारिता शिक्षा का कार्य चलता रहा। इस प्रकार हम भारत और पाकिस्तान में प्री पी.पी. सिंह को पत्रकारिता शिक्षा का प्रणेता मान सकते हैं। आजाद भारत में चंडीगढ़ का पत्रकारिता विभाग सबसे पुराना विभाग है।

आजादी के बाद 1947 में मद्रास विश्वविद्यालय में सबसे पहले पत्रकारिता विभाग की स्थापना की गई थी। 1952 में महाराष्ट्र के नागपुर में हिस्लोप कालेज में यहां के स्थानीय पत्रकारों के प्रयास से पत्रकारिता शिक्षा का आरंभ किया गया। आरंभ में दसवीं को न्यूनतम योग्यता मान कर प्रवेश दिया जाता था। वह सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम था। जिसे बाद में बढ़ाकर डिप्लोमा पाठ्यक्रम का आरंभ किया गया। जिसका अध्यक्षीय कार्यभार संभालने के लिए अमेरिका के प्रोफेसर रोनाल्ड वोल्सेली को बुलाया गया। 1958-1959 में प्रोफेसर के.ई. ईपन इसके अध्शक्ष बने।

1960 के दशक में भारत सरकार ने पत्रकारिता और मीडिया के क्षेत्र में प्रशिक्षण के महत्व को जाना और देश के आर्थिक विकास में प्रसार माध्यमों को जोड़ना जरूरी समझा। इसलिए माध्यमों के ज्ञाता विल्वर श्रम को भारत में बुलाया गया। उन्हीं की सिफारिश के बाद भारत सरकार द्वारा 1964 में नई दिल्ली में इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ मास कम्युनिकेशन की स्थापना की गई। यह संस्थान केंद्र सरकार के सुचना व प्रसारण मंत्रालय से सीधे नियंत्रण में है। देश-विदेश के 50 से 60 छात्र इसमें प्रतिवर्ष पत्रकारिता और न्यूज एजेंसी के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। कुछ वर्ष पहले इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन की एक ओर शाखा को आरंभ किया गया।

1976 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को महसूस हुआ कि प्रचार माध्यमों को शिक्षा, प्रशिक्षण तथा संशोधन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एकरूपता लाने के लिए ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके बाद ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विश्वविद्यालयों को मीडिया विभागों के लिए खास साधन और सुविधा उपलब्ध करवाना आरंभ किया। इसका परिणाम यह हुआ की देश की आजादी के समय मीडिया शिक्षा देने वाले देश में आठ से दश विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़कर आज 65 हो गई है।

## वर्तमान स्थिति

जैसे-जैसे अध्ययन कार्यक्रमों के संदर्भ में अधिक प्रगति हुई है, पत्रकारिता और जनसंचार में अध्ययन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय विकास हुआ है। आज देश के लगभग सभी विश्वविद्यालय जनसंचार और पत्रकारिता के क्षेत्र में अध्ययन कार्य करवा रहे हैं। इनमें से लगभग आधे से अधिक में स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। ये पाठ्यक्रम अन्य पाठ्यक्रमों से कई प्रकार भिन्न हैं। हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम को स्नातक उपाधि में बदल दिया था। बाद में अन्य विश्वद्यालयों ने भी इस पद्धति का अनुसरण किया। कुछ विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता को स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में प्रधान विषय के रूप में जगह प्रदान की है। इसके अलावा कुछ विश्वविद्यालयों में आज भी स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में पत्रकारिता को एच्छिक विषय के रूप में रखा गया है।

भारत में मीडिया शिक्षा में विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित करवाने वाले प्रमुख विश्वविद्यालय निम्नलिखित है।

1. भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली- 1965 में स्थापित मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में यह भारत सरकार का राष्ट्रीय संस्थान है। यहां पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिए जाने की व्यवस्था की गई है। विकासशील देशों के पत्रकारों को यहां स्नातकोत्तर स्तर का प्रशिक्षण दिया जाता है। संस्थान द्वारा अंग्रेजी में कम्यूनिकेटर और हिंदी में जनसंचार नामक पत्रिकाएं प्रकाशित की हैं। इसके अलावा 40 विश्वविद्यालय वर्तमान समय में मीडिया से संबंधित पाठ्यक्रमों का आयोजन करते हैं। सरकारी संस्थानों के अलावा गैरसरकारी कालेजों में भी मीडिया और संचार में प्रशिक्षण दिया जाता है। डा॔. राजेंद्र प्रसाद इंस्टीट्यूट आफ कम्यूनिकेशन इस क्षेत्र में प्रमुख संस्थान है।

## हरियाणा के विश्विद्यालय

संयुक्त पंजाब में राज्य के दक्षिणी हिस्से में स्थित हरित प्रदेश के नाम से विख्यात हरियाणा की स्थापना से पहले ही 1956 में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य को लेकर तात्कालिन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र के प्रयासों से कुरुक्षेत्र की भूमि पर (पवित्र सरोवर) ब्रह्मसरोवर के पश्चिमी किनारे पर 400 एकड़ भूमि पर कुरुक्षेत्र विश्वद्यालय की स्थापना की गई। आरंभ में केवल संस्कृत विभाग से शुरू हुआ विश्वविद्यालय वर्तमान समय में बहुउद्देश्यी शिक्षण विभागों के साथ हरियाणा के नवयुवकों को शिक्षा प्रदान कर रहा है। जो आज अपनी अग्रिम शिक्षा और शोध के क्षेत्र में पूरे भारतवर्ष में जाना जाता है।

1966 में प्रदेश की स्थापना के बाद महसूस किया गया कि हरियाणा वासियों को उच्चतर शिक्षा प्रदान करने के लिए एक विश्वविद्यालय काफी नहीं है। हरियाणा के नवयुवकों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य को -लेकर तात्कालिन हरियाणा सरकार द्वारा 1976 में महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम पर रोहतक में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। विश्वविद्यालय में इस समय 27 स्नातकोत्तर विभाग हैं। जिनमें 77 शिक्षण प्रोग्राम रखे गए हैं। विश्वविद्यालय द्वारा हरियाणा में शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य को लेकर दो क्षेत्रीय केंद्रों की स्थापना भी की गई। जो नेशनल लाॅ काॅलेज गुड़गांव और एक क्षेत्रीय केंद्र रेवाड़ी में शिक्षण उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं।

1995 में हरियाणा वासियों को साइंस और टेक्नालाॅजी की शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य को लेकर तत्कालिन मुख्यमंत्री के प्रयासों से हिसार में गुरू जम्भेश्वर के नाम पर गुरु जम्भेश्वर विश्वद्यालय साइंस और टेक्नालाॅजी की 20 अक्तूबर 1995 को स्थापना की गई। जिसमें 8 शिक्षण स्नातकोत्तर विभाग है। जो मीडिया शिक्षा, एनर्जी एड इनवायरमेंट साइंस, मेनेजमेंट, साइंस और टेक्नालाॅजी, फार्माक्लियूटीज, इंजीनियरिंग, मेडिकल साइंस और धार्मिक शिक्षण विभागों की स्थापना की गई। विश्वविद्यालय आज हरियाणा के नवयुवकों को शिक्षित कर अपने उद्देश्य को पूरा कर रहा है।

सभ्यता के विकास के साथ ही और हरियाणावासियों की शिक्षा में रूचि बढ़ने के कारण प्रदेश सरकार को लगातार विश्वविद्यालयों की कमी महसूस होने लगी। जिसके साथ ही 1970 में प्रदेश में हिसार जिले में कृशि क्षेत्र में शोध कार्यों के लिए पूर्व प्रधानमंत्री चैधरी चरण सिंह के नाम पर चैधरी चरण सिंह हरियाणा कृशि विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। हरियाणा के दक्षिणी जिले सिरसा में 5 अप्रैल 2003 को तत्कालिन मुख्यमंत्री चै. ओम प्रकाश चैटाला के प्रयासों से पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री देवी लाल के नाम पर चैधरी देवी लाल विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। जो सिरसा में बरनाला रोड़ पर 348 एकड़ में फैला है। विविद्यालय द्वारा इतने कम समय में ही छात्रों को प्रभावी शिक्षा प्रदान की जा रही है। विश्वविद्यालय में वर्तमान समय में 16 शैक्षणिक विभाग है। जिनमें 21 कोर्स पढ़ाए जा रहे हैं। इसके साथ ही पत्राचार पाठ्यक्रमों के माध्यम से भी विद्यार्थियों को प्रभावी शिक्षा प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही प्रदेश में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य को लेकर सरकार की ओर से लगातार प्रयास किए गए। जिसके साथ ही कई विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। वहीं प्रदेश सरकार के साथ ही निजी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों की स्थापना भी जारी रही। वर्तमान में प्रदेश में सरकार और गैर सरकारी कुल 53 विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

## हरियाणा में मीडिया शिक्षा

हरियाणा में मीडिया शिक्षा का दौर भी अपने देश की तरह ही धीमा रहा। पंजाब से अलग होने के बाद हरियाणा में पत्र और पत्रिकाओं की शुरूआत भी धीमी रही। वहीं मीडिया शिक्षा के मामले में भी यह अन्य राज्यों के काफी पीछे रहा। हरियाणा में इस समय चार विश्वविद्यालयों में ही मीडिया शिक्षा से संबंधित विभाग स्थापित किए गए हैं। इसके साथ ही इन विश्वविद्यालयों से संबंधित कॉलेजों में भी मीडिया शिक्षा को स्नातक स्तर पर शुरूआत की गई है।

अगर हम हरियाणा में मीडिया शिक्षा के प्रारंभ की बात करें तो राज्य का दर्जा प्राप्त होने के लगभग डेढ़ दशक बाद ही मीडिया शिक्षा आरंभ हो सकी। 1988 में महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग को स्थापना की गई थी। जिसमें आरंभ में केवल प्रिंट मीडिया के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाता था। वरिष्ठ पत्रकार ताराचंद को उस समय विभागाध्यक्ष नियुक्त किया गया था। लेकिन प्रशासनिक कारणों के चलते विभाग दो साल के बाद ही बंद करना पड़ा। लगभग पांच साल के लंबे अंतराल के बाद 1989 में रोहतक के डीसी लेफ्टिनेंट जैसी अग्रवाल के प्रयासों के चलते विश्वविद्यालय में विभाग को दोबारा आरंभ किया गया। जिसमें स्नातक के बाद एक साल का डिप्लोमा कोर्स और पत्रकारिता की स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम को आरंभ किया गया। 1991-92 में

द्वारा ग्रामीण पत्रकारिता में डिप्लोमा आरंभ किया गया। लेकिन विद्यार्थियों का अच्छा रिस्पोंस न मिलने के कारण इसे भी दो वर्ष के बाद बंद कर दिया गया। वर्ष 2004 में विभाग द्वारा जनसंचार में मास्टर डिग्री को आरंभ किया गया। जो नियमित रूप से हरियाणा और बाहर के छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है।

हरियाणा में पहला स्वतंत्र जर्नलिज्म विभाग गुरु जंभेेश्वर विश्वविद्यालय हिसार में स्थापित किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा इस विभाग में पत्रकारिता के साथ ही मैनेजमेंट और टेक्नालॉजी को भी शामिल किया गया। विभाग में आरंभ में केवल 30 विद्यार्थियों को हो शिक्षा प्रदान की गई थी। लेकिन कुछ ही समय बाद विभाग द्वारा बड़ी प्रगति की गई। विश्वविद्यालय में आज मीडिया से संबंधित तीन स्वतंत्र विभागों को स्थापना की गई है। जिन्हें सीएमटी विभाग, विज्ञापन प्रबंधन और पब्लिक रिलेशन विभाग और प्रिंटिंग टेक्नालाजी विभाग नाम दिया गया है। जिनमें आजकल विभाग द्वारा मीडिया से संबंधित लगभग नौ प्रकार के कोर्स आरंभ किए गए हैं। जिनमें 250 विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जा रही है।

विश्वविद्यालय द्वारा एमएससी मास कम्युनिकेशन कोर्स दो वर्ष का पाठ्य क्रम निर्धारित किया गया है। पहले वर्ष में सभी विद्यार्थियों को सामान्य विषयों की जानकारी दी जाती है। लेकिन दूसरे वर्ष में प्रिंट, इलेक्ट्रानिक और विज्ञापन और पब्लिक रिलेशन में स्पेसलाइजेशन करवाया जाता है। विभाग के पास वर्तमान समय में सुसज्जित स्टूडियो है। विभाग के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई विज्ञापन विडियोज को

हरियाणा सरकार को भेजा जाता है। जो अपने सरकारी कार्यों के लिए इनका प्रयोग करती है। इसके अलावा विज्ञान प्रबंधन और पब्लिक रिलेशन विभाग द्वारा एक साल का डिप्लोमा करवाया जाता है। जिसमें विभाग द्वारा 20 सीटें निर्धारित किया गया है। इस विभाग से निकले विद्यार्थियों को कई विज्ञापन एजेंसियों में कार्य अनुभव की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

हरियाणा के सबसे पहले और बड़े कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में काफी बाद में कदम बढ़ाया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में जर्नलिज्म विभाग की स्थापना 1995 में की गई थी, लेकिन विश्वविद्यालय के जर्नलिज्म विभाग को वर्ष 2006 में मास कमन्यूनिकेशन मेनेजमेंट और टेक्रोलाजी संस्थान के रूप में स्थापित किया गया। संस्थान में विभिन्न प्रकार के नौ कोर्सों को आरंभ किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा भी वर्तमान समय में सैकड़ों विद्यार्थियों को मीडिया से संबंधित शिक्षा प्रदान की जा रही है। जो आज भी देश के कई बड़े मीडिया संस्थानों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

वर्ष 2003 में श्री ओम प्रकाश चैटाला के प्रयासों से सिरसा में पूर्व मुख्यमन्त्री चै. देवी लाल के नाम पर बना विश्वविद्यालय भी मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में पीछे नहीं रहा। विश्वविद्यालय में प्रारम्भिक वर्ष में ही जर्नलिज्म विभाग को स्थापना की गई। विभाग द्वारा पहले वर्ष जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन में दो वर्षीय डिग्री प्रारम्भ की गई। इसके साथ ही पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा पत्राचार जनसंचार में मास्टर आॅफ फिलोस्फी की डिग्री आरंभ की गई।

## पत्राचार पाठ्यक्रम

आज के व्यस्त जीवन में रेगुलर कोर्स करने संभव नहीं रह गए है। इसलिए विभिन्न विश्वविद्यालयों ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम की व्यवस्था की है। इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्याल ने इस व्यवस्था को आरंभ किया था।

पत्रकारिता के कोर्सों में भी आज इस व्यवस्था में अपनाया गया है। बहुत सारे मीडिया कर्मी इन कोर्सों के द्वारा अपने कार्य में गुणवत्ता में सुधार करते है। हरियाणा में सबसे पहले गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालय हिसार ने पत्राचार माध्यम से मीडिया शिक्षा में मास्टर आफ मास कम्यूनिकेशन की दो वर्ष की डिग्री आरंभ की थी। जिसका रिस्पोन्स काफी अच्छा प्राप्त हुआ। इसके बाद विश्वविद्यालय ने बैचलर आॅफ जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन में एक वर्ष का पीजी डिप्लोमा आरंभ किया गया।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक ने भी इसके बाद एडर्वटाइजिंग (विज्ञापन) में डिप्लोमा आरंभ किया। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी पत्राचार विभाग द्वारा एक वर्श का पीजी डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन आरंभ किया गया। इसके साथ ही एमए मास कम्यूनिकेशन की दो वर्ष की डिग्री आरंभ की है।

विश्वविद्यालयों में शिक्षा की गुणवता को बनाए रखने के लिए कोर्स के समय में कुछ समय के लिए रेगुलर क्लास की निर्धारित की गई

है। जिनमें विश्वविद्यालय प्राध्यापकों द्वारा उन छात्रों को पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षित किया जाता है। उसके अलावा विश्विद्यालयों द्वारा उन कक्षाओं में बाहर से मीडिया विशेषज्ञों को बुलाकर व्याख्यान भी दिए जाते हैं। पत्राचार माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए उन कक्षाओं में आना अनिवार्य किया जाता है। पत्राचार माध्यम से प्राप्त होने वाली शिक्षा से बहुत सारे सिनियर मीडियाकर्मी लाभ उठा चूके हैं। चै. देवी लाल विश्वविद्यालय ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के साथ ही कदम से कदम मिलाकर वर्ष 2006 में जर्नलिज्म एण्ड मास कम्यूनिकेशन में एम. फिल. की डिग्री पत्राचार पाठ्यक्रम के द्वारा प्रारम्भ कर दी। हालांकि विश्वविद्यालय की ओर से इसे अगले वर्श ही किसी कारण से बंद करना पड़ा।

## संदर्भग्रंथ सूची


1. मीडिया- भाषा और साहित्य, राज सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली 1996
2. हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा तब से अब तक, कनिश्का पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2002
3. पचौरी, सुधीश, गुप्ता, आशा रंजन, आर वी०, राजमन, एम. ए., कम्यूनिकेशन एजूकेशन इन इंडिया-17 (1) 1994 कम्यूनिकेशन एजूकेशन एंड दा निड़ ऑफ मीडिया-1994 में मलेशिया में दिए गए वक्तव्य के सांराश, दा एशिया फाऊनडेशन पब्लिकेशन जर्नलिज्म एजूकेशन एंड रिसर्च इन इंडिया-1997
4. एजेण्डा फोर कम्यूनिकेशन इन इंडिया आई० आई० एम. सी. नई दिल्ली-1989
5. लेवल ऑफ पब्लिक रिलेशन कोर्सिस-1994
6. दलाल, याशीन एस., बसीरूद्दीन दुरानी एन ए के रेड्डी, नरसिम्हा पब्लिक रिलेशन एजूकेशन एंड ट्रैनिंग इन इंडिया-हैदराबाद
7. ब्रिज, एडम, पाल दा मीडिया एन इन्ट्रोडक्शन कोवले. गाँधी, वेद प्रकाश, मीडिया एंड कम्यूनिकेशन टूडे पब्लिकेशन नई दिल्ली-1997
8. कम्यूनिकेशन टूडे, जर्नल्जिम एंड पी० आर० एजूकेशन स्पेशल, पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया-2001